Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. V, Issue X, April-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

निराला का काव्य संसार

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. V, Issue X, April-2013, ISSN 2230-7540

निराला का काव्य संसार

Sapana Kakher[1] Dr. Urmial Rawat[2]

[1]Research Scholar, Singhania University, Shillong, Meghalaya

[2]Research Supervisor

----------X----------

जब कोई नव काव्य–धारा साहित्य में अपना स्थान बनाती है तो उसके पीछे अनेक प्रेरक शक्तियाँ होती हैं। छायावाद या निराला काव्य की पृष्ठभूमि भी बहुमुखी है। साहित्यक और सामाजिक परिस्थितियों का इस पर विशेष प्रभाव पड़ा है। खड़ी बोली ने कविता में अभी स्थान बनाया ही था कि द्विवेदी काल में भाषा में व्यवस्था और एकरूपता तो आई और उसकी काव्योपयोगिता सिद्ध करने में भी द्विवेदी युगीन कवि प्रयत्नशील थे।

द्विवेदी युगीन कविता नैतिकता, इतिवृत्तात्मक और बहुमुखी प्रवृत्ति से बँधी हुई थी। छायावाद के मूल में इनकी प्रतिक्रिया स्वरूप अभिधात्मक अभिव्यक्ति के स्थान पर कल्पना प्रवणता स्थूल की बजाय सूक्ष्म की बाधा थी और बाहयपरक भाव वस्तु–बोध के स्थान पर वैयक्तिक वेदना तथा सौन्दर्य के प्रति नवीन अपरिमित अनुराग था।

छायावादी कवियों के लिए द्विवेदीयुग में ही स्वच्छन्दतावादी काव्य पूर्व–पीठिका बन चुका था इन कवियों में कल्पना एवं भावनाओं की नव कोमतला के साथ–साथ सर्वप्रथम अभिव्यंजनागत कुछ मृदुता भी दिखाई देने लगी थी।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि ''छायावाद के पूर्व ही हिन्दी में एक स्वच्छन्दवादी काव्य प्रवृत्ति का विकास हो रहा था। परन्तु काव्य में छायावाद की प्रतिष्ठा का श्रेय रामनरेश त्रिपाठी, मैथिलीशरण गुप्त आदि इन कवियों को नहीं, बल्कि बंगला के अघ्येता प्रसाद, निराला, पन्त ही छायावाद के प्रवर्तक कवि हैं। श्रीधर पाठक आदि की तरह प्रसाद जी की आरम्भिक कविताएँ भी स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति की द्योतक है।''और वस्तुत सन् 1905 से ही वे इस ढंग के काव्य की रचना कर रहे थे परन्तु छायावाद के अन्तर्गत नवीन शैली और नवीन भावों से ओत–प्रोत उनकी कविताएँ झरना' में ही प्रकाशित हुई इसमें सन्देह नहीं कि स्वच्छन्दवादी काव्य ने छायावादी की पुष्ट पृष्ठभूमि का निर्माण किया और यह भी कहा जा सकता है कि छायावाद स्वच्छन्दवादी कविता का नया चरम विकास था।

वैज्ञानिक भौतिक युग की उपज पूँजीवादी पद्वति और उसके द्वारा शोषण ने समाज को विनाश उत्पीड़न एवं व्यथा में डुबो दिया था इस युग का प्रभाव भी छायावादी कवियों पर पड़ना स्वाभाविक था वैयक्तिक जीवन में भी हमारे नव कवियों को बराबर विफलताओं का सामना करना पड़ रहा था। निराला का जीवन तो व्यथा की कहानी है। जीविका चलाना भी दूभर था, इस प्रकार वैयक्तिक एवं सामाजिक व्यथा से असंतोष की उग्र भावना हमारे कवियों में जागृत हुई एक ओर समाज की रूढ़ियों के प्रति असंतोष व्यंजित करने लगे दूसरी ओर बाह्य जीवन के संघर्षों के स्थान पर अपने ही अन्तर की झाँकी लेने लगे।

''छायावादी काव्य एक दृढ़ दार्शनिक भित्ति पर आरूढ़ है। स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ एवं गाँधी जी ने छायावादी काव्य के लिए दार्शनिक भूमिका निर्मित कर दी थी आर्दशात्मक आध्यात्मिक चिंताधारा का प्रभाव छायावादी काव्य पर खूब पाया जाता है।''

सदियों से जकड़े हृदय–कपाट को खोलकर कवि नव्य–विराट की आकांक्षा करने लगा सब संकीर्णताओं को मिटाकर वह चाहने लगा– एक कर दे धरती आकाश। नवयुग के नवीन सामाजिक आध्यात्मिक दर्शन ने ही आत्म–विकास की यह भावना जगाई, निराला पर स्वामी विवेकानन्द का अमिट प्रभाव पड़ा, प्रसाद, निराला, पन्त, महादेवी आदि सभी छायावादी कवियों ने प्राचीन दर्शन का भी छायावादी कवि प्रकृति के कण–कण में इसी के कारण एक सचेतन सत्ता का आभाव पाता है इसी भावना से उसका प्रेम आध्यात्मिक है।

छायावाद पर वर्तमान युग के आध्यात्मिक दर्शन का ही प्रभाव पड़ा है। नव युग के विचारकों ने वेद, उपनिषद, गीता, वेदान्त तथा वैष्णव धर्म को मिलाकर एक ऐसे आध्यात्मवाद को जन्म दिया जो देश की प्राचीन दार्शनिक परम्परा में होता हुआ भी वर्तमान युग की सामाजिक आवश्यकताओं के अनुकूल था। ''आध्यात्म दर्शन के इसी समाजीकरण के कारण छायावादी दर्शन प्रवृत्तिमूलक है। आधुनिक कवि संसार को सत्य और वास्तविक मानकर चले है।''

पन्त ने अपने 'गुंजन' में तथा प्रसाद ने 'कामायनी' के आनन्दवादी दर्शन में विश्व के सौन्दर्य और सत्य का साक्षात्कार कराया है निराला यद्यपि कुछ मायावाद की ओर झके हैं इस संसार को ही निराला ने भी स्वर्ग बनाना चाहा है इसे छोड़कर उन्हें 'अधिवास' की भी बाधा नहीं।

छायावादी कवियों को सामाजिक एवं वैयक्तिक व्यथा ने दबाया हुआ था अतः छायावाद की कविता में व्यथा, चेतना और दुखवाद का स्वर गूंज उठा, दुखवाद भी छायावाद का एक प्रमुख तत्व है निराला तो अन्त तक यहीं कहते रहे।

दुख ही जीवन की कथा रही

क्या कहुँ आज जो नहीं कही।

महादेवी का तो समस्त काव्य दुख और पीड़ा से ही भरा है पर यह दुखवाद निराशा और वेदना संध्या की कालिमा नहीं। प्रत्युष की निहारिका समझनी चाहिए, दुख और करूणा को इन कवियों

www.ignited.in

ने एक ऐसा तत्व बना दिया जो जीवन को मरूस्थल नहीं अपितु उर्वर कुसुमाकर बनाता है।

''छायावादी कवियों ने इस वेदना और दुख को एक व्यापक सार्वभौम तत्व के रूप में चित्रित किया इसी से महादेवी पीड़ा में ही अपने प्रियतम को ढूँढती रही।''

निराला का हृदय भी करूण स्वर से भरा हुआ है जब तक उनके हृदय से यह करूणा और वेदना की भावना है भला तब तक वे 'अधिवास' की बात कैसे कर सकते हैं।

छायावादी कवि इसी विश्ववेदना के भाव से जीवन विमुख व्यक्तिगत मुक्ति का निषेध करता है वह इस संसार के बन्धन में ही अपनी मुक्ति मानता है। जीवन और जगत की लालसा निराला आदि कवियों में बराबर पायी जाती है। दुख–सुख के सामंजस्य से पूर्ण वह चराचर विश्व प्रसाद, पन्त, निराला सब को सुन्दर लगा है। निराला काव्य में पन्त, प्रसाद और महादेवी जैसी सुख–दुख के समन्वय की स्पष्ट भावना नहीं पायी जाती फिर भी वे इससे अछूते भी नहीं रहे 'यमुना' के प्रति' कविता में उन्होंने अतीत के सुख–दुखमय जीवन की कल्पना की है।

छायावादी कवियों ने नवयुग का आह्वान बड़े उत्साह से किया वे मानवता को नये हरे–भरे परिधानों में देखना चाहते थे। नवयुग मृतप्राय और गली–सड़ी सामाजिक परम्पराओं को वे कैसे सहन करते? इसी से प्रायः सब कवियों ने प्राचीन जीर्ण–शीर्ण रूढ़ियों को मृत्यु–दण्ड दिया है। इस प्रकार छायावादी कविता हमारे राष्ट्रीय और सांस्कृतिक आन्दोलन को भी बड़ी सूक्ष्मता के साथ छूती है। किन्तु छायावादी कवि जीवन की यथार्थ समस्याओं और उसकी विभीषिका में संघर्षशील नहीं हुआ जीवन की वास्तविकता उसे कई प्रकार खिन्न बना देती है।

जिस विराट रहस्यमय सौन्दर्य सत्ता के प्रति छायावादी कवियों ने जिज्ञासा और विस्मय की भावना व्यक्त की है उसी की छवि का पान करने की तीव्र आकांक्षा इनमें पायी जाती है। छायावादी कवि पन्त ने प्रकृति के कण–कण में उस परोक्ष सत्ता के संकेत और मौन नियंत्रण सर्वाधिक अनुभव किये है।

ब्रहमज्ञानी निराला जी में यह विस्मय और उत्कंठा की भावना अपेक्षाकृत कम थी फिर भी उस अनन्त के प्रति जिज्ञासु पाये जाते है वह स्वंय तरंगों से पूछते हैं–

किस अनंत का नीला अंचल हिला–हिलाकर

आती हो तुम सजी मंडलाकर

''इस प्रकार छायावाद का एक दृढ़ दार्शनिक पक्ष है जिसे निराला ने पुष्ट किया। इस छायावादी दर्शन में अनेक तत्वों का सामंजस्य पाया जाता है।जड़–चेतन,व्यष्टि–समष्टि,पुरूष–नारी,प्रवृत्ति–निवृत्ति,भक्ति–बंधन,जीवन–मृत्यु, पलायन और प्रगति, द्वैत और अद्वैत, सात और अनन्त तथा राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता आदि सब में सामंजस्य का अद्भुत प्रयास किया गया है।''

छायावादी कवियों ने बहुधा प्रकृति के मानवीकरण रूप में प्रकृति के संश्लिष्ट चित्र प्रकट किये हैं। प्रकृति को नारी रूप में अधिक चित्रित किया गया है। निराला की 'सन्ध्या–सुन्दरी' जब परी–सी मेघमय आसमान से उतरती है तो उसकी मन्थर धीर और गम्भीर गति में ही सन्ध्या का शान्त नीरव और गम्भीर वातावरण उतर आता है।

नारी–रूप में प्रकृति का चित्रण करके छायावादी कवियों ने प्रकृति के माध्यम से अपनी श्रृंगार भावना को भी तुष्ट किया है। निराला की 'जूही की कली', शेफालिका' आदि कविताएँ इसी प्रवृत्ति की द्योतक हैं इसमें प्रकृति का ऐन्द्रिक चित्रण हुआ है।

प्रकृति की ही भाँति छायावाद में नारी–चित्रण की प्रधानता है। छायावादी कवियों ने न केवल प्रकृति में नारी का आरोपण किया, अपितु स्वतन्त्र रूप में भी उन्होंने नारी नैसर्गिक रूप का प्रचुर चित्रण किया, आधुनिक युग में पुरूष और नारी में स्वछन्द प्रेम का विकास हुआ। साहित्य में पहली बार नारी को प्रेयसी का समान अधिकार और उच्च स्थान तथा माता का गौरव प्राप्त हुआ।

छायावादी कवियों ने नारी मुक्ति का नारा लगाया–प्रकृति की तरह उन्होंने नारी के मुख्यतः दो रूपों का ही अवलोकन किया है एक उसका 'सखि' सहचरी प्राण प्यारी' का रूप और दूसरा 'देवी माँ' का विराट रूप।

पूर्व युग की नारी भावना से छायावादी नारी भावना का अन्तर समझने के लिए मैथिलीशरण गुप्त और प्रसाद जी की नारी भावना का अन्तर समझ लेना पर्याप्त है।

छायावादी कवियों के शब्द चयन की एक बहुत बड़ी विशेषता है सभिप्राय विशेषणों का प्रयोग, सुन्दर लाक्षणिक चित्रात्मक विशेषणों के प्रयोग में ये कवि बहुत कुशल हैं। निराला काव्य में सौईतन, स्निग्ध, आलोक, ज्योर्तिमयी लता आदि अनेक सहज प्रयोग मिलते है, भाषा को चित्रात्मक शक्ति प्रदान करने का इन कवियों ने स्तुत्य कार्य किया, निराला अपने विराट चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं। सन्ध्या सुन्दरी, जूही की कली, रत्नावली आदि में अनेक चित्रों में उनकी चित्रशक्ति का परिचय मिलता है लाक्षणिक मूर्तिकला, मानवीकरण, विशेषण–विपर्यय आदि छायावादी शैली की सभी विशेषतायें निराला की भाषा में पायी जाती है। छायावादी कवियों की सौन्दर्य चेतना ने अप्रस्तुत विधान को भी एक नवीन दीप्ति प्रदान की है प्रभाव साम्य पर इन कवियों ने अधिक ध्यान दिया है। छायावादी कवियों की सांकेतिक अभिव्यक्ति अन्योक्ति, समासोक्ति, रूपक्रान्ति–श्योक्ति तथा रूप को स्यगरूपको आदि के रूप में भी प्रकट हुई।

इस प्रकार छायावाद की कलात्मक अभिव्यक्ति नवीन भाषा शैली नई शब्द छन्द योजना आदि सब कुछ नव के आग्रह से पुष्ट हुई छायावादी कवियों की रंगीन कला उनकी कल्पना शक्ति की अद्भुत देन है।

अन्त में कहा जा सकता है, कि छायावाद हमारी विशेष सामाजिक और साहित्यिक आवश्यकता का प्रतिफल है वह न केवल अभिव्यक्ति की एक नूतन अनूठी पद्धति मात्र है जैसा कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आदि छायावाद के कतिपय आरम्भिक आलोचकों का मत था न केवल प्रकृति को चेतना प्रदान करना मात्र छायावाद है–

''छायावाद के चार स्तम्भ प्रसाद निराला पन्त और महादेवी और उसकी गौरव गाथा के प्रतीक हैं चारों ने छायावाद के समस्त अंगों को विकसित करने में योग दिया फिर भी किसी ने किसी पक्ष पर अधिक रंग भरा तो किसी ने अन्य में। निराला जी छायावादी कविता में भाव और अभिव्यंजना के नये पथ निकालने और नये प्रयोग करने में सबसे आगे रहे''।

पन्त जी सौन्दर्य–चयन और अभिव्यंजना शक्ति संवारने में अग्रणी रहे। महादेवी ने गीत–संगीत में विशेष प्राण–प्रतिष्ठा की। प्रसाद में इन सबकी विशेषताओं के अंश सम्मिलित है। इन चारों में निराला का व्यक्तित्व सबसे अधिक विद्रोही और क्रान्तिकारी रहा।

महादेवी और पन्त केवल अनुभूतियों के ही कवि रहे है। प्रसाद और निराला में ओज और संघर्ष भी पाया जाता है इन दोनों में निराला में संघर्ष का स्वर अधिक मुखर और स्पष्ट है।

सहायक ग्रंथी

1. अणिमा – लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, नवीन संस्करण–सन्–1975ई0

2. अनामिका – भारती भण्डार लीडर प्रेस, सम्वत्–2005

3. अपरा – बही ग्यारहवाँ संस्करण

4. असंकलित कविता – सम्पादक नवलकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन हेतु सन्–1985ई0

5. अर्चना – निरूपमा प्रकाशन शहराबाग, प्रयाग

6. आराधना – साहित्यकार संसद, प्रयाग प्रथम संस्करण सम्वत्–2010

7. कुकुरमुत्ता – लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद सन्– 1969ई0

8. गीत गुंज – हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी द्वितीय संस्करण

9. गीतिका – भारती भण्डार लीडर प्रेस, इलाहाबाद तृतीय संस्करण सम्वत्–2005

10. तुलसीदाय – भारती भण्डार लीडर प्रेस, इलाहाबाद तृतीय संस्करण सम्वत्–2005

11. नये पत्ते – लोक भारती प्रकाशन सन्–1973ई0

12. परिमल – गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ बारहवाँ संस्करण सन्– 1972ई0

13. बेला – निरूपमा प्रकाशन शहराबाग, प्रयाग